F-5
D.El.Ed-1st year

इकाई-III

Date:- 09.05.2020

Topic:- भाषा सीखना : नोम चॉमस्की

Ans:→ चॉमस्की बच्चों के भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता में विश्वास रखते हैं और यह स्वीकार करते हैं कि बच्चे इसी क्षमता के सहारे अपने परिवेश से भाषा को ग्रहण करते हैं और विभिन्न भाषिक संरचनाओं को आत्मसात करते हुए नए-नए वाक्य बनाते हैं। पियाजे, चॉमस्की और वाइगोत्स्की इसी विचारधारा का समर्थन करते हैं। लेकिन फिर भी उनके मतों में थोड़ा थोड़ा अंतर देखने को मिलता है। भाषा केवल अनुकरण के माध्यम से नहीं सीखी जा सकती। सीमित वाक्य सुनकर असीमित वाक्यों को बोलना 'भाषिक अर्जन क्षमता' (Language Acquisition Device) द्वारा संभव है। प्रत्येक बच्चा भाषा सीखने की क्षमता लेकर पैदा होता है। या यूँ कहें कि भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है। इसी क्षमता के सहारे बच्चा रोज नए-नए भाषिक प्रयोग करता है। इस तरीके से भाषा सीखने की प्रक्रिया को नीचे दिए गए चित्र के द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है—

बच्चा अपने परिवेश में जो भाषा और जिस तरह की भाषा सुनता है उसे अपनी भाषिक क्षमता के सहारे विश्लेषण करता है। समाज से प्राप्त भाषिक आंकड़ों के आधार पर अपने कुछ नियम बनाता है। जिसे चॉमस्की 'लघु व्याकरण' कहते हैं। इस 'लघु व्याकरण' में बच्चों के अपने नियम होते हैं जिसे वह सामान्यीकरण की प्रक्रिया के द्वारा बनाता है। इन्हीं नियमों के आधार पर वह भाषा का प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए बच्चा निम्नलिखित वाक्य सुनता है—

⇒ रोहित केला खाता है।
⇒ नदीम केला खाता है।
⇒ शोभा केला खाती है।
⇒ नीना केला खाती है।

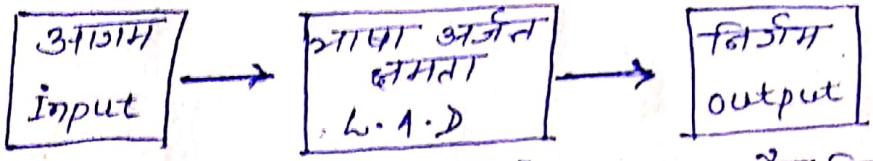

P.T.O.